संस्कृति समाचार

दो दिवसीय मुक्तिबोध जन्मशती समारोह रतलाम में आयोजित

रतलाम। जनवादी लेखक संघ रतलाम द्वारा वर्तमान संदर्भ पर केंद्रित दो दिवसीय साहित्यिक आयोजन 12 एवं 13 मई को किया गया । इसमें देश के प्रख्यात लेखक, कहानीकार असगर वजाहत एवं सुप्रसिद्ध कवि नरेश सक्सेना की उपस्थिति उल्लेखनीय रूप से रही । पहले दिन के प्रथम सत्र को संबोधित करते हुए श्री असगर वजाहत ने कहा कि मुक्तिबोध जनता के कवि थे। वह जनता की पीड़ा और जनता के पक्ष को प्रबलता के साथ प्रस्तुत करते रहे। यही कारण है कि आज भी उनकी रचनाओं से हमें नई राह मिल रही है।

उन्होंने कहा कि जनता के लिए जनता की बात करने वालाए उसके दुखदर्द को कविता में ढालने वाला, कवि अपनी ईमानदारी, वैचारिक प्रतिबद्धता के चलते स्वयं की किताब प्रकाशित किए बिना ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है । यह विडंबना मुक्ति बोध के साथ भी घटित हुई। अपने जीते जी वे तमाम आलोचनाओं के शिकार रहे। यह कहा गया कि उनकी कविता जटिल है । कविता केवल सौंदर्य, वीर रस नहीं है बल्कि सही मायने में कविता वह है जो आप को सोचने के लिए मजबूर करती है ।

मुक्तिबोध जन्मशती समारोह के रतलाम में जनवादी लेखक संघ द्वारा आयोजित कार्यक्रम को इस वक्त के लिए आवश्यक आयोजन निरूपित करते हुए जनवादी लेखक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रोफेसर असगर वजाहत ने कहा कि साहित्यकार जन से कोई सत्ता लेता नहीं है न ही साहित्यकार की ऐसी कोई कामना होती है। बल्कि अपनी रचना से वो जन को ताकत देता है । कवि की दी हुई शक्ति कोई जन से छीन नहीं सकता। संस्कृति की शक्ति राजनीतिक शक्ति से बड़ी होती है । उन्होंने कहा कि इसी लिए आजादी के बाद संस्कृति पर हमले हुए। वर्तमान सरकार इन हमलों को तेज कर रही है ताकि उनकी जनविरोधी नफ़रत की राजनीति को कोई चुनौती न मिले । संचार माध्यमों पर इतना प्रत्यक्ष कब्जा इससे पहले कभी नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि मध्यम वर्ग के प्रति अपनी सोच को भी हमें बदलना होगा। क्योंकि यही वर्ग समाज में विचार का वातावरण तैयार करता है। प्रसिध्द कवि नरेश सक्सेना ने कहा कि मुक्ति बोध सोच विचार के कवि हैं। मुक्ति बोध का घर ऐसे तलाब के किनारे बना था, जैसे उसी में से निकला हो। इसी से उनकी आर्थिक विषमता का अंदाजा लगया जा सकता है । उन्हें दो दो बार दूरसंचार और आकाशवाणी की नौकरी से निकाला गया क्योंकि वे साम्यवादी थे। मगर उनका विश्वास डगमगाया नहीं । उन्होंने कहा कि मुक्तिबोध ने स्टीफन हाकिन्स से भी पहले अंतरिक्ष के बारे में कई जानकारियां अपनी कविता में दी हैं। सभा की अध्यक्षता करते हुए मुक्ति बोध की रचनाओं का अंग्रेजी में अनुवाद करने वाले सुप्रसिद्ध अनुवादक एवं साहित्यकार रतन चौहान ने कहा कि मुक्तिबोध जितनी बार पढ़े जाते हैं नए अर्थों में हमारे सामने आते हैं यही कारण है कि मुक्तिबोध को आसानी से नहीं समझा जा सकता लेकिन जब मुक्ति बोध को समझ लिया जाता है तो वह हमारे भीतर उतरते हैं और हमारे विचार के स्वरूप को बदल देते हैं।

समारोह के दूसरे दिन जलेसं के पूर्व अध्यक्ष और कथाकार दूधनाथ सिंह को श्रद्धांजलि स्वरूप सभा को संबोधित करते हुए असगर वज़ाहत ने कहा कि दूधनाथ सिंह हमारे समय के बड़े कथाकार थे उन्होंने अपनी कहानियों के जरिए जो शैली और बिम्ब हमारे सामने प्रस्तुत किए वह यादगार है। श्री नरेश सक्सेना ने इस अवसर पर अपनी कविताओं का पाठ किया। दूसरे सत्र के दौरान रचनाकारों को नंदलाल उपाध्याय अतुल विश्वास पुरस्कार प्रदान किए गए। रतलाम के जनकवि रहे नंदलाल उपाध्याय अतुल विश्वास के परिवार द्वारा प्रतिवर्ष दिए जाने वाले यह पुरस्कार श्री असगर वजाहत, श्री नरेश सक्सेना सहित ग्वालियर की मान्यता सरोज, इंदौर के निर्मल शर्मा, रतलाम के डॉ ओम प्रकाश ऐरन, श्याम माहेश्वरी, शिक्षाविद रणजीत सिंह सिसोदिया को प्रदान किया गया।

प्रस्तुति . आशीष दशोत्तर,रतलाम .457001
मो 98270 84966

पत्र

फरवरी अंक मिला, आभार। ललित जी ने तपती रेत पर हरसिंगार की भावभरी समीक्षा ही कर दी है। जो पूरी पढ़े बिना मन ही नहीं भरता। ज़हीर कुरेशी भूले बिसरे शायर स्तंभ में खोजपरक जानकारी दे रहे हैं। इस बार समीक्षा के अंतर्गत नितिन सेठी द्वारा की गई समीक्षा ध्यान खींच गई। हरेराम समीप द्वारा हिंदी ग़ज़लकारों पर केन्द्रित पुस्तक से विस्तृत, एवं सम्यक समीक्षा की गई है।

चंद्रसेन विराट, इंदौर।